सूमके घर धूम।

मूल लेखक—
स्व० द्विजेन्द्रलाल राय।

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर सीरीजका सोलहवाँ ग्रन्थ।

सूमके घर धूम।

स्वर्गीय कविवर द्विजेन्द्रलाल रायके 'पुनर्जन्म' नामक

बंगला प्रहसनका अनुवाद।

साथ सब ले जायँगे यों कह रहे थे सेठ,
ना खिलायेंगे न खुद भी खायँगे भर पेट।
मौतका जामा पहिन तब 'हँसी' आई झूम,
निठुर बनकर लगी करने सूमके घर धूम।

अनुवादकर्ता—

पं० रूपनारायण पाण्डेय।

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग, बम्बई।

चतुर्थावृत्ति] ज्येष्ठ १९८१। [मूल्य चार आने।

जून १९२४।
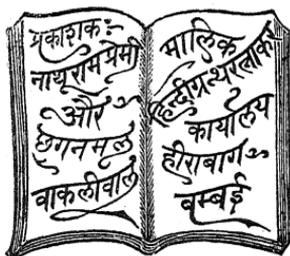
प्रिंटरः—एम्. एन्. कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रेस, ३१८ ए,
ठाकुरद्वार, मुंबई नं. २.

वक्तव्य ।

डीन स्विफ्टने सचमुच ही एक पञ्चाङ्ग बनाने-वाले जीते जागते ज्योतिषीको मुर्दा साबित कर दिया था । उसके अत्याचारसे निरुपाय होकर ज्योतिषीने अपने तईं जोवित साबित करनेके लिए एक वकील नियुक्त किया । कहा जाता है कि तब भी वह ज्योतिषी अपने अस्तित्वको अच्छी तरह प्रमाणित नहीं कर सका । उसी कथाको लेकर प्रसिद्ध नाटककार स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय महाशयने बंगलामें ‘ पुनर्जन्म ’ नामक एक प्रहसन लिखा था । उसीका यह हिन्दी अनुवाद है । इस प्रहसनका मर्म अगर पाठक जानना चाहें तो वे अनुग्रहपूर्वक जरा ध्यान देकर इसपर विचार करें । इसमें नीतिके उपदेशका अभाव नहीं है ।

विनीत—

रूपनारायण पाण्डेय ।

सूमके घर धूम ।

स्थान—दौलतरामकी बाहरी बैठक । **समय**-दिन ।

(फर्श, टेबिल, कुर्सी, आदि सब इधर उधर अस्त व्यस्त पड़ा हुआ है । पास ही एक पलँग पड़ा है । दीवारमें एक घड़ी लगी है । उसमें सात बजकर सत्रह मिनट हुए हैं ।)

[दौलतरामके विपत्नीक बहनोई बिहारीलाल और दौलतरामकी दुबाराकी स्त्री चुन्नी, दोनों खड़े हैं ।]

बिहारी—आज वही वैसाख-वदी चौथ है । मैंने पहलेसे ही सबको समझा रक्खा है ।

चुन्नी—मगर अब मैं सोचती हूँ कि इससे फल क्या होगा !

बिहारी—फल ? अगर कुछ न होगा तो कमसे कम उस बेचारेकी जान तो बच जायगी । जानती हो, असामियोंने उसे (तुम्हारे स्वामीको) मौका पाकर मार डालनेका निश्चय कर लिया है !

चुन्नी—तो इसमें उनका अपराध क्या है ? सूदहीके लिए तो रुपये उधार दिये जाते हैं—सूद न लें ? जब महाजनीकी—

बिहारी—लोगों-गरीबोंका घरद्वार बिकवा लेना महाजनी है ? यह तो राहजनी है ! सवेरे उठकर इस डरसे कोई उसका नाम नहीं लेता कि उस दिन खानेको नहीं मिलेगा ! यात्राके समय कोई उसका मुख देखना नहीं चाहता ! बहुत लोग सवेरे-शाम उसकी मौत मनाते हैं ! यह क्या बड़े सुखकी अवस्था है ?

चुन्नी—तो फिर तुमने जो ढंग सोचा है वह बहुत अच्छा है— भोजनका भोजन और दवाकी दवा ! लेकिन निशाना ठीक बैठे तो है।

बिहारी—ठीक बैठेगा ! सालेको ज्योतिषके ऊपर बड़ा विश्वास है। ज्योतिषीके इस कहने पर उसको पूरा विश्वास होगया है कि वैसाख वदी चौथके दिन दोपहरको अपने ही घरमें साँपके काटनेसे उसकी मौत होगी।

चुन्नी—वे इस समय हैं कहाँ ?

बिहारी—मोती झीलके भीतर गले भर पानीमें यह समझकर चुपचाप बैठा है कि पानीके भीतर रहनेसे किस तरह अपने घरमें साँप काटेगा।

चुन्नी—(हँसकर) वाह !

बिहारी—आज बड़ा मजा होगा ।

चुन्नी—बेशक, बड़ा मजा होगा ! मगर अभी तक आये नहीं ।

बिहारी—आता ही होगा ।—तुमसे जो जो करनेको कह दिया है सो सब याद है ?

चुन्नी—सब याद है ।

बिहारी—अच्छा अब भीतर जाओ ।

चुन्नी—खूब मजा होगा । अब तो देर सही नहीं जाती ।—

बिहारी—दौलतने पूर्वजन्ममें बड़ा तप किया था, इसीसे इस जन्ममें उसे ऐसी स्त्री मिली है ! सालेके बे-शुमार रुपये हैं, लेंकिन अपनी स्त्री

तकको पेटभर भोजन नहीं दे सकता। तब भी चुन्नी हँसती ही रहती है! कोई मजेकी बात होनी चाहिए—हँसते हँसते लोटपोट हो जाती है।—साला कंजूसोंका सरदार है! बुढ़ापेमें ब्याह किया है—एक सुन्दर पढ़ी-लिखी औरत है—और एक महामूर्ख है। मूर्ख न होता तो जन्मपत्रके फल पर विश्वास करता!

(नन्दू, मोहन, रामचन्द्र और सुन्दरका प्रवेश।)

बिहारी—तुम लोग आगये! ठीक समय पर आये—दौलत आता ही होगा।

मोहन—यहाँ सब ठीक है?

बिहारी—सब ठीक है। केवल दौलतके दोनों लड़कोंसे अभी नहीं कहा गया। तीन दिनसे वे घर ही नहीं आये। पैसा खर्च न हो, इस लिए साला उनको पढ़ाता लिखाता भी नहीं! ऐसी दशामें यदि वे बिगड़ न जायँ तो और क्या हो? दोनों लड़के किसी कामके नहीं हैं।

मोहन—(सन्देहसे) हाँ!

बिहारी—लेकिन वे भी कहना मान जायँगे। वे भी यही राह देख रहे हैं कि कब बूढ़ा सूम मरेगा। बापके मरनेका हाल सुनकर लड़के क्या करते हैं, यह भी साला देख ले।—लो वह आगया दौलतराम! रामचन्द्र लेट जाओ—लेट जाओ।

(रामचन्द्र लेट जाता है।)

बिहारी—तुम सब रामचन्द्रको घेरकर बैठ जाओ।

(सब वही करते हैं। बिहारी रामचन्द्रके ऊपर चादर डालता है।)

बिहारी—खूब दुःख दिखानेके ढंगसे बैठो रामचन्द्र! हिलो डुलो नहीं।

(सब उसी तरह बैठते हैं।)

बिहारी—सब ठीक है ?

सब—ठीक है ।

बिहारी—तो मैं जाता हूँ । ठीक समय पर आकर पहुँच जाऊँगा तुम सब अब दुःख प्रकट करो ।

(दौलतरामका प्रवेश ।)

दौलत—खूब जान बचाई । जन्मपत्रका हिसाब भी गलत होता है । मैंने सोचा था, ठीक दोपहरको जान जायगी । (घड़ी देखकर) दोपहर बीत गई; अब कुछ डर नहीं ।

मोहन—आहा हा हा ! बेचारा मर गया !

नन्दू—दोपहरको—

सुन्दर—साँपके काटनेसे !

दौलत०—(घबराकर) कौन मरा ?

मोहन—भाग्यके लिखेको

नन्दू—कोई नहीं मिटा सकता ।

सुन्दर—तब भी लोग ज्योतिषशास्त्रको नहीं मानते ।

दौलत०—अरे मरा कौन ?

नन्दू—लड़कोंमेंसे तो कोई अभीतक नहीं आया ।

मोहन—कबसे हम लोग बैठे हैं ।

सुन्दर—और कबतक राह देखेंगे ? चलो लाशको मसान ले चलें ।

दौलत०—अरे भाई, किसकी लाश मसान ले जाओगे ?

मोहन—हाय हाय, सेठ दौलतराम—

नन्दू—आखिरकार—

सुन्दर—मर ही गये !

दौलत०—ऐं ! दौलतराम मर गये ! कौन दौलतराम ?

मोहन—ऐसा घर-द्वार—

नन्दू—दुबाराकी व्याही परम सुन्दरी स्त्री–

सुन्दर—आहा हा हा !

दौलत०—कौन मर गया ?

मोहन—जी, सेठ दौलतराम !

दौलत०—(खफा होकर) दौलतराम क्यों मरने लगे साहब ?

नन्द—क्यों मरने लगे, सो हम क्या जानें साहब !—लेकिन मर गये हैं !

सब—आहा हा हा !

दौलत०—आप लोग कह क्या रहे हैं ? मैं तो जीता जागता खड़ा हूँ ।

मोहन—आप कौन हैं साहब ?

दौलत०—मैं ही तो सेठ दौलतराम हूँ ।

नन्दू—हूँ !

दौलत०—हूँ क्या ?

मोहन—वाह भैया वाह !

नन्दू—कौन आदमी ?

दौलत०—आप लोग क्या पागल हो गये हैं ? आप लोग देखते नहीं कि मैं ही दौलत—

मोहन—चले जाइए साहब ! शोकके सयम दिल्लगी करना अच्छा नहीं लगता ।

नन्दू—कोई गंजेड़ी है क्या !

सुन्दर—चल दे यहाँसे ।

दौलत०—कैसी आफत है ! आप लोग क्या पागल हो गये हैं ? मैं ही दौलतराम सेठ हूँ । देख न लीजिए—

मोहन—हाँ ! अच्छा देखें (देखता है ।)

(नन्दू उसका सिर घुमाकर उसे सिरसे पैर तक निहारता है और सुन्दर उसके चारों ओर घूम कर देखता है ।)

नन्दू—अजी ! देखनेमें तो सेठजीसे बहुत कुछ मिलता जुलता है !

सुन्दर—रूप तो खूब रक्खा है !

मोहन—वाह !

दौलत०—रूप रखना कैसा ?

मोहन—हाँ बना तो खूब है ! मगर यह नाक वैसी नहीं है !

दौलत०—नाक वैसी नहीं है, इसके क्या माने ? (नाकको टटोलकर देखना ।)

नन्दू—और रंग तो कुछ कुछ वैसा ही बना लिया है !

दौलत०—बना लिया है !

सुन्दर—चोटी भी रख ली है !—भाई वाह !

मोहन—लेकिन यह नाक—

नन्दू—और सुन्दर—हाँ, यह नाक—

दौलत०—नाक क्या हुई ?

मोहन—(सिर हिलाकर) नहीं,—नहीं बनी !

नन्दू—उँहूँ !

सुन्दर—असामियोंको धोका न दे सकोगे ।

दौलत०—क्या ! आप लोग क्या यह कहना चाहते हैं कि मैं दौलतराम नहीं हूँ ?

मोहन—वाह भैया वाह ! तुम्हारी हिम्मत बेशक तारीफके लायक है । बोली भी वैसी ही बना ली !

नन्दू—बेशक !

सुन्दर—नकल बुरी नहीं की ।

मोहन—हाय हाय, दुबाराकी ब्याही जोरू–

नन्दू—पढ़ी-लिखी–

सुन्दर—जवान !

दौलत०—जवान हो या बूढ़ी, तुम्हारा उसमें क्या ? वह मेरी जोरू है !

मोहन—खूब ! सिर्फ असामियोंको धोका देनेकी ही नियत नहीं है–

नन्दू—औरत पर भी हाथ सफा करना चाहते हैं हजरत !

सुन्दर—हूँ !

दौलत०—आप लोग–कौन हैं आप लोग ?

(असामियोंका प्रवेश ।)

पहला असामी—क्यों साहब, सेठ दौलतराम क्या मर गये ?

मोहन—जी हाँ, हम सब उनकी लाशको मसान लिये जाते हैं ।

दूसरा असामी—ओह ! यही वह आदमी है ?

तीसरा असामी—जो सेठजीका रूप रखकर आया है ?

दौलत०—रूप रखकर आया है ?

सुन्दर—हाँ, यह वही आदमी है ।

चौथा असामी—यह कोई ठग है ।

दौलत०—ठग है !–निकल जाओ मेरे घरसे ।

प० असामी—तुम निकल जाओ ।

दौलत०—यह मेरा घर है ।

दू० असामी—ओह ! हम लोगोंको धोका देने आये हो ! लेकिन हम धोका नहीं खा सकते ।

चौ० असामी—हम एक पैसा न देंगे ।

दौलत०——नालिश होने पर एक पैसेसे बहुत अधिक देना पड़ेगा ।

ती० असामी—नालिश करेगा ! हिम्मत तो देखो !

प० असामी——मैं तुमको पुलिसके सिपुर्द कर दूँगा ।

ती० असामी——बुलाओ पुलिस !

चौ० असामी——मैं तुम्हारा सब ढौंग अभी निकाले देता हूँ ।

दू० असामी——जाओजी, पुलिसको तो बुला लाओ ।

(पहले असामीका प्रस्थान ।)

मोहन——चलो नन्दू ! हम लोग लाश ले चलें । कहाँतक राह देखेंगे ।

सुन्दर——उठाओ ।

नन्दू——हाँ, उठाओ——

(लाशको उठाना ।)

सब——राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्त है । (प्रस्थान ।)

दौलत०——ये लोग मसान किसकी लाश ले गये ! दौलतराम सेठकी ? तो फिर मैं कौन हूँ ?

दू० असामी——धोखेबाज !

दौलत०——गाली गुफ्ता न करना, कहे देता हूँ——

ती०असामी——अच्छा रूप रक्खा है !

दौलत०——फिर !

चौ० असामी——मारो सालेको !

दौलत——अजी साहब—

सब——चुप रहो ।

(क्रमशः सबका मिलकर उसे मारना ।)

दौलत०——सिपाही, ओ सिपाही !

(एक तरफसे दौलतकी लड़की और दूसरी तरफसे बिहारीका प्रवेश ।)

बिहारी——क्या है जी, क्या है ! यह गोलमाल और गुलगपाड़ा काहेका है ?

दौलत०——आगये बिहारी, देखो तो भाई——

सब——चुप रहो ।

बिहारी——मामला क्या है !

दौलत०——यही, ये लोग देखो तो——

सब——चुप रहो ।

बिहारी——अरे भाई मामला क्या है ?

दू० असामी——जी, सेठ दौलतराम मर गये हैं ?

ती० असामी——यही सुनकर हम लोग भी आये हैं ।

चा० असामी——लेकिन बीचमें यह पाजी न जाने कहाँसे सेठ दौलतरामका रूप रखकर आगया !

दौलत०——लेकिन मैं——

सब——चुप रहो ।

बिहारी——आः——गोलमाल क्यों करते हो साहब ! मैं सब ठीक किये देता हूँ !——सेठ दौलतराम मर गये हैं ?

दू० आदमी——जी हाँ ।

बिहारी——लेकिन मैंने तो नहीं सुना ! ऐसा हो ही नहीं सकता !

दौलत०——देखो तो ! मैं जीता जागता——

सब——चुप रहो ।

बिहारी——आः क्या करते हो ! तुमको ठीक मालूम है कि सेठजी इन्तकाल कर गये ?

ती० असामी——जी हाँ । आपके आनेके कुछ ही पहले लोग उनकी लाशको मसान ले गये हैं ।

बिहारी——कब ?

चौ० असामी——अभी दोपहरको ।

बिहारी——कैसे मरे ?

दू० असामी——साँपके काटनेसे ।

बिहारी——दोपहरको साँपने काटा । ऐसा हो ही नहीं सकता ।

दौलत०——देखो तो भाई ! यह अत्याचार देख रहे हो ! मेरे जीते जी ही——

सब——चुप रहो !

बिहारी——दोपहरको साँपके काटनेसे कैसे मरे ?

दू० असामी——कोई उपाय न था । जन्मपत्रमें लिखा था । क्या करते ?

बिहारी——अच्छा, जन्मपत्र निकालो । (लड़कीसे) ले तो आ बेटी अपने बापका जन्मपत्र ।

(लड़कीका जाना ।)

बिहारी——जन्मपत्रमें लिखा है ?——ठीक जानते हो ?

चौ० असामी——ठीक ।

ती० असामी——हम लोग क्या झूठ कह रहे हैं ?

दौलत०——लेकिन मैं जीता हूँ ।

बिहारी——अच्छा ठहरो, कुंडली देखनेसे आप मालूम पड़ जायगा ।

दौलत०——यह तो बड़ी मुश्किल देख पड़ती है—क्या तुम भी मुझको नहीं पहचानते ।

बिहारी——आप घबराते क्यों हैं साहब, वह देखिए जन्मपत्र आगया ।

(लड़कीका जन्मपत्र लाकर बिहारीको देना ।)

बिहारी—कहाँ लिखा है ?

चौ० असामी—देखूँ—यह देखिए—वैसाखवदी चौथके दिन दोपहरको साँपके काटनेसे मौत लिखी हुई है। स्पष्ट ही तो लिखा है कि चौथके दिन दोपहरको केतुकी दशा उतरनेके पहले घरमें साँपके काटनेसे मौत होगी।

बिहारी—हाँ ठीक तो है। (लड़कीसे) जाओ बेटी, तुम भीतर जाओ।

(लड़कीका जाना।)

बिहारी—(चिन्तित भावसे पढ़ते पढ़ते और मूछों पर हाथ फेरते फेरते) हूँ ठीक, लिखा हुआ तो है।

दौलत०—लेकिन तुम तो भाई मुझे पहचानते हो।

बिहारी—(धीरे धीरे सिर हिलाकर) ऊँ, हूँ!—Case खराब है।

(मोहनका फिर प्रवेश।)

मोहन—यह डॉक्टरका दिया हुआ सेठजीका मौतका सर्टिफिकेट भी लिजिए।

बिहारी—क्या ? सर्टिफिकेट ?

मोहन—हाँ, यह देखिए, दौलतराम सेठके मरनेकी बात लिखी हुई है–I certify that Seth Daulatram is defunct. He is as dead as doornail.

दौलत०—अरे बापरे !

बिहारी०—साहब—आपका Case धीरे धीरे बहुत ही खराब होता जा रहा है। शायद चल ही नहीं सकता।

दौलत०—क्यों ?

बिहारी—इधर जन्मपत्र है, उधर डॉक्टरका सर्टिफिकेट है।

ती० असामी—फिर हम सब लोगोंने अपनी आँखोंसे देखा है कि लोग सेठ दौलतरामकी लाश मसान ले गये हैं।

बिहारी——सबने देखा है ?

असामी लोग——सबने !

बिहारी——ऊँहूँ——Case किसी तरह टिक नहीं सकता।——इतने पर भी अगर कोई जिन्दा रहे तो——

दौलत०——(आग्रहके साथ) तो फिर ?

बिहारी——तो वह जीना नामंजूर।

दौलत०——बिहारी ! तुम भी क्या मुझको नहीं पहचान सकते ?

बिहारी——इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता। पृथ्वी पर कभी कभी दो आदमी बिलकुल एक ही सूरतके देख पड़ते हैं। जैसे जोड़ियाकी पैदाइश। इस बातका कोई प्रमाण नहीं कि दौलतरामके बापको दो जोड़िया लड़के नहीं पैदा हुए थे। दौलतरामके पितासे कभी यह बात पूछी नहीं गई। और इस समय उनसे पूछना भी असंभव है, क्योंकि वे इस समय स्वर्गमें हैं।

दौलत०——लेकिन मैं तो कहता हूँ।

बिहारी——आपकी बात मानी नहीं जा सकती। आप कौन हैं, यही तो मामला पेश है। अगर मैंने आपको दौलतराम मान ही लिया, तो आप साबित क्या करेंगे ? आपके कहनेसे कुछ साबित नहीं होता।

दौलत०——तो फिर कैसे साबित होगा ?

बिहारी——आपके कोई गवाह है ?

दौलत०——नहीं। और उसकी जरूरत ही क्या है ?

बिहारी——ये सब लोग एक स्वरसे कहते हैं कि आप सेठ दौलतराम नहीं हैं (असामियोंसे) क्यों ! आप लोग कहते हैं न ?

असामी—हाँ, हम सब कहते हैं।

दौलत०—आप लोग क्या सचमुच गंभीर भावसे यह बात कहते हैं?

सब असामी—गंभीर! जरा इधर देखिए (अत्यन्त गंभीर भावसे) आप सेठ दौलतराम कभी नहीं हैं।

दौलत०—तो क्या सचमुच मैं सेठ दौलतराम नहीं हूँ?

दू० असामी—कभी नहीं।

ती० असामी—दौलतरामका क्या ऐसा ही चेहरा था?

चौ० असामी—दौलतराम बनकर असामियोंको धोका देने आये हो भैया!

पाँ० असामी—मैं तो देनेके नाम एक पैसा भी न दूँगा।

दौलत०—मैं नालिश करूँगा।

बिहारी—अदालतमें तुम्हारी नालिश मंजूर ही कब होगी? इन्होंने तो सेठ दौलतरामसे कर्ज लिया था। आप तो सेठ दौलतराम हैं ही नहीं?

दौलत०—मैं सुबूत दूँगा।

बिहारी—साबित करना मुश्किल हो जायगा। (असामियोंसे) आप सब लोग शायद गवाही देंगे कि यह सेठ दौलतराम नहीं है।

सब असामी—(एकसाथ) जरूर।

बिहारी—फिर क्या हो सकता है?

(दौलतका हताशभाव दिखाना।)

बिहारी—साहब, मैं वकील हूँ। आपको दोस्तके तौरपर सलाह देता हूँ कि ऐसा काम न कीजिएगा, नहीं तो जेल जाना पड़ेगा।

दौलत०—जेल?

बिहारी—हाँ, जाली आदमी बननेके जुर्ममें! चार सालके लिए!

दौलत०—अरे बापरे!

बिहारी——यद्यपि मैं आपको नहीं पहचानता, तथापि दोस्तकी तौर पर समझाता हूँ कि जान बूझकर इस आफतमें पैर न रखना ! सुनिए, आप किसी तरह पूरी तौरसे यह साबित न कर सकेंगे कि आप दौलतराम सेठ हैं।

दौलत०——क्यों ?

बिहारी०——इस आपके जन्मपत्रने ही सब मामला बिगाड़ रक्खा है। आप ही कहिए, जन्मपत्र कहीं झूठा होता है ?

दौलत०——(सिर खुजाते हुए) हाँ, जन्मपत्र तो कभी झूठा नहीं होता।

बिहारी——उसके ऊपर डॉक्टरका सर्टिफिकेटको जो लोग मरे-जिला नहीं सकते, मगर जिन्दाको अनायास ही मार डाल सकते हैं। मैं कहता हूँ, आपके सेठ दौलतराम होनेमें घोर सन्देह है, और अगर आप हों भी तो उसे साबित करना असंभव है।

दौलत०——तुमको भी सन्देह है ?

बिहारी०——आप ही सोचकर देखिए। आपको खुद क्या सन्देह नहीं होता ? इधर जन्मपत्र और उधर डॉक्टरका सर्टिफिकेट !

दौलत०——डॉक्टरने क्या सचमुच लिखा है कि मैं मर गया ?

बिहारी——यह देखिए न। (सर्टिफिकेट देना।)

दौलत०——(सिर खुजाते हुए) हाँ, लिखा तो है !

बिहारी—— आपके सामने ही वे लोग सेठजीकी लाशको मसान ले गये, और फिर भी आपको अपने सेठ दौलतराम होनेमें सन्देह नहीं होता ?

दौलत०——(धीरेसे) हाँ, ले तो गये हैं। (सिर पकड़कर) मुझे चक्कर आ रहा है।

(अखबार पढ़ते पढ़ते नन्दूका प्रवेश ।)

नन्दू——

मर गये लाला दौलतराम । जो थे सूम बहुत बदनाम ॥
लेते बेशुमार थे सूद । वैसे हुए नेस्तनाबूद ॥
जोंक बना था वह मनहूस । ऋणी-रक्त-धन लेता चूस ।
कष्ट उठाकर था धन जोड़ा । मरने पर अब जाकर छोड़ा ॥
जिनको बदा वही खावेंगे । सेठ कियेका फल पावेंगे ॥

बिहारी——यह क्या ! अखबारोंमें भी सेठजीके मरनेका हाल छप गया ?

नन्दू——जी हाँ ।

बिहारी——क्या ! छापेके अक्षरोंमें ?

नन्दू——देखिए न ।

बिहारी——(अखबार देखकर दौलतसे) साहब, आपका case hopeless हो गया है ।

(दौलतराम सिर पकड़कर बैठ जाता है ।)

बिहारी——(असामियोंसे) आप लोग इस समय अपने अपने घर जाइए । मैं अब दौलतरामकी estate को administration में लेनेका प्रबन्ध करने जाता हूँ ।

दौलत०——(उठकर) Letter of administration ! कौन लेगा ?

बिहारी——दौलतरामकी विधवा स्त्री । अब मुझे ही इस जायदादका इन्तजाम करना होगा । क्या करूँ ?——(असामियोंसे) तुम पर जो रुपये बाकी हैं उनका सूद अब तुमसे नहीं लिया जायगा ।

दौलत०——क्यों ?

असामी——जय हो बिहारी भैय्याकी जय हो !

(प्रस्थान ।)

दौलत०—(बिहारीसे) सूद क्यों न लिया जायगा ?

बिहारी—सूद लेनेकी जरूरत क्या है ? सेठजी बहुतसा रुपया छोड़ गये हैं ।

दौलत०—छोड़ गये हैं ! (नम्रता दिखाते हुए) बिहारी, भाई ! लेकिन मैं तो मरा ही नहीं ! तुम्हारी कसम मैं नहीं मरा !

बिहारी—मैं क्या करूँ साहब ? कानूनसे आपका जीना साबित नहीं होता । (प्रस्थान ।)

(परोसिनोंका प्रवेश ।)

१ परोसिन—अच्छा हुआ ।

२ परोसिन—आफत गई ।

३ परोसिन—बहुत रुपये जमा कर गया है । आप भरपेट नहीं खासका—

४ परोसिन—अब दस गैर लूटकर खायँगे !

५ परोसिन—सूमका धन इसी तरह जाता है ।

दौलत०—सुन सुनकर मुझे भी सन्देह हो रहा है कि मैं जीता हूँ या मर गया हूँ ! परोसिनो !—

१ परोसिन—यह कौन है ?

दौलत०—मैं—

२ परोसिन—बहुरूपिया ?

दौलत०—दौलतराम—

३ परोसिन—अरे मर !

दौलत०—सेठ ।

४ परोसिन—मर गया !

दौलत०—नहीं, अभी नहीं मरा !

५ परोसिन—निकल यहाँसे मुर्दे ।

दौलत०—मैं निकलूँ ?—यह मेरा घर है, हरामजादियो, तुम निकलो !

१ परोसिन—यह कौन है रे !

२ परोसिन—हम क्यों निकलें रे ?

३ परोसिन—क्यों निकलें ?

४ परोसिन—बतला तो सही !

५ परोसिन—मर मुर्दे !

दौलत०—(अवाक् होकर) वाह !

१ परोसिन—कलमुहा मर गया, अच्छा हुआ । (बैठती है ।)

२ परोसिन—लोगोंकी जान बची । (बैठती है ।)

३ परोसिन—दोनों लड़के पेट भर खायँगे । (बैठती है ।)

४ परोसिन—लड़की मगर खानेको न पावेगी । (बैठती है ।)

५ परोसिन—बुड्ढेको नरकमें भी जगह न मिलेगी । (बैठती है ।)

दौलत०—बैठ गई !—दौलतराम सँभालो ! तुम्हारा अस्तित्व ही मिटाया जा रहा है ! अपनेको बचाओ—नहीं तो बस मरे !—(परोसिनोंसे) निकलो हरामजादियो यहाँसे; निकलो—निकलो ! न निकलोगी ? अच्छा ठहरो—(बाहरसे लकड़ी लाकर) निकल जाओ, इसीमें खैर है, नहीं तो देखो इसी लकड़ीसे—

१ परोसिन—वाह, खूब बना है !

दौलत०—निकलो !

२ परोसिन—मारेगा क्या ?

दौलत०—मार डालूँगा । (लाठी घुमाते हुए) निकलो !

३ परोसिन—मार तो सही ! देखें तो ! (ईंट उठाना ।)

दौलत०—अरे बापरे ! (पीछे हटता है ।)

४ परोसिन—निकल मुर्दे निकल, नहीं तो सिर तोड़ दूँगी !

दौलत०—(डरकर) नहीं नहीं—मैं जाता हूँ ।

५ परोसिन—नहीं तो (झाड़ू उठाकर) यह झाड़ू देखी है ?

दौलत०—अरे बचाओ ।

(दौलत भागता है और उसके पीछे दौड़ती हुई परोसिनें जाती हैं ।
दौलतकी लड़कीका प्रवेश ।)

लड़की—लालाजी ! लालाजी ! अम्मा रो रही है ।

(दौलतरामका प्रवेश ।)

दौलत०—कौन रो रहा है ?

लड़की—अम्मा ।

दौलत०—क्यों ?

लड़की—मैं क्या जानूँ ?

(नेपथ्यमें विलाप)

"अरे तुम कहाँ चले गये—तैयार रसोई छोड़कर कहाँ चल दिये—ऊँ हूँ हूँ हूँ !"

दौलत०—वाहवाह, औरत तकने मरा समझकर रोना शुरू कर दिया ! अरे मुनुआकी अम्मा—मैं जीता हूँ । आया । (लड़कीसे) चलो बेटी ।

(कन्याका जाना और उसके पीछे दौलतरामका जानेकी चेष्टा करना ।
दौलतरामके सालोंका प्रवेश । उनके साथ सन्दूक, पिटारे ट्रंक वगैरह हैं ।)

१ साला—ले चलो, ले चलो !

दौलत०—अब यह क्या है ?

२ साला—अजी कुलीको बुलाओ ?

३ साला—कुली ! कुली ! (प्रस्थान ।)

दौलत०—अरे कुलीको क्यों पुकारते हो ? सब सामान क्यों घरसे बाहर निकाल फेंके देते हो ?

२ साला—ले जायँगे।

दौलत०—कहाँ ?

१ साला—कहाँ ? और कहाँ ? अपने घर!—

दौलत०—क्यों ? मेरा सामान अपने घर क्यों ले जाओगे ?

२ साला—तुम्हारा सामान ?

दौलत०—जी।

१ साला—(व्यंग्यके तौरपर) जी,—लो कुली आगये।

(तीन चार कुलियोंके साथ तीसरे सालेका फिर प्रवेश।

२ साला—उठाओ! पहले यह लोहेका सन्दूक उठाओ!

(कुलीलोग लोहेका सन्दूक उठानेकी कोशिश करते हैं।)

दौलत०—खबरदार! (आगे बढ़ता है।)

१ साला—चुप रहो! (मारनेको तैयार होता है।)

दौलत०—बिहारी! बिहारी! (जाता है।)

(सब सालोंका एक दूसरेको देखकर इशारा करना और हाथकी ओट करके हँसना।)

१ साला—बिहारीको लेकर फिर आरहा है।

२ साला—(कुलीसे) झट उठाओ—

३ साला—जल्दी जल्दी!

(बिहारीके साथ दौलतरामका फिर प्रवेश।)

दौलत०—बिहारी, देखो तो सही कैसा अन्धेर है—

बिहारी—(दौलतके सालोंसे) क्यों साहब! आपलोग घरका असबाब कहाँ लिये जा रहे हैं ?

१ साला—क्यों न ले जायँ ? ये सब चीजें अब हमारी बहनकी हैं।

२ साला——वह अब हम लोगोंके पास रहेगी ।

३ साला——क्योंकि हमारे जीजाजी मर गये हैं ।

दौलत०——देखते हो अंधेर ! मेरे जीतेजी यह अत्याचार हो रहा है । उधर स्त्री जारही है और इधर मेरा सब कुछ——(रोता है ।)

बिहारी——भाइयो ! दौलतरामकी विधवा इस समय मेरी स्त्री है । क्योंकि हाल हीं मेरी स्त्री मर गई है और तुम्हारी बहनका पति मर गया है ।

दौलत०——इससे यह प्रमाणित हो गया है कि मेरी स्त्री तुम्हारी स्त्री है ।

बिहारी——कमसे कम यह साबित करना कुछ कठिन नहीं है । (दौलतके सालोंसे) आप लोग इस समय घर जाइए । इस लोहेके सन्दूकको मैं अपने जिम्मे लेता हूँ ।

साले——यह क्या साहब ?

बिहारी——ज्यादह चालाकी न कीजिएगा । मैं वकील हूँ । बस चले जाइए ।

साले——अगर न जायँगे तो ?

बिहारी——तो कानूनी बहससे तुम लोगोंको उड़ा दूँगा । गवाहोंके द्वारा खाकमें मिला दूँगा ।

साले——अरे बापरे ! चलो, चलो । (जाते हैं ।)

बिहारी——(दौलतसे) अब आप भी जाइए । यह घर अब मेरा है । सेठ दौलतराम मर गये ।

दौलत०——लेकिन मैं तो मरा नहीं ।

बिहारी——इसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता है । कोई गवाह है ?

दौलत०——क्यों, मेरी स्त्री गवाही देगी ।

बिहारी——अच्छी बात है, अपनी स्त्रीको बुलाइए ।

दौ०—सुनती हो मुनुआकी अम्मा ! जरा इधर आओ । लज्जा करके अब क्या होगा ? मैं जान और मालसे जा रहा हूँ। बाहर आओ।

[रोते रोते चुन्नीका प्रवेश ।]

मैं हुई अकेली छुटे सहारे सारे ।
इस तरह छोड़ कर कहाँ सिधारे प्यारे ?
हूँ नहीं जानती राह, भटकना होगा ।
ठोकर खाकर सिर-पैर पटकना होगा ।
हे प्राणनाथ, दो दरस, तरस कुछ खाओ ।
पैरोंसे ठेलो नहीं, नाथ, अपनाओ ॥
मैं व्याकुल रोती यहाँ तुम्हारे मारे ।
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—नहीं नहीं, मैं पैरोंसे नहीं ठेलूँगा । आहा, कैसी सती स्त्री है !

(चुन्नीका रोते हुए गाना ।)

यह कढ़ी पकौड़ी बड़े, मुँगौड़ी भाजी ।
है सभी रसोई अभी बनाई ताजी ॥
बिधना, तूने क्या निठुर ठान ठाना है ?
अफसोस, अकेले मुझे सभी खाना है ॥
तुमको न बदे थे खान-पान ये न्यारे ।
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—रसोई बनाई है ? मैं भी तुम्हारे साथ खाऊँगा ! आहा कैसी सती लक्ष्मी है !

(चुन्नीका रोते हुए गाना ।)

मल मलकर नित्य खिजाब अजीब मसाले ।
सन ऐसे उजले बाल बनाकर काले ॥
ज्वानीकासा सब रंग ढंग दिखलाना ।
सोनेके तारों बँधे दाँत चमकाना ॥

सपने ऐसी वह हँसी हुई दैयारे !
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०——अरे मैं हँसूँगा । [दाँत निकालकर हँसता है ।]

(चुन्नीका रोते हुए गाना)

आकर अब मुझको कौन कहेगा प्यारी ?
बढ़िया ला देगा कौन दुपट्टे सारी ?
एसेंस, लवेंडर, टूथपाउडर साबन ।
किससे अब माँगूँ, राम, जड़ाऊ जोशन ॥
मिलकर मरते तो रंज न कुछ फिर था रे ॥
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०——मेरी प्यारी रो न, मैं आता हूँ । (चुन्नीका हाथ पकड़ता है।)

चुन्नी——अरे बापरे ! यह कौन है ?

दौलत०——मैं तुम्हारा स्वामी हूँ—तुम्हारा प्यारा हूँ—तुम्हारा नाथ, तुम्हारा प्राणेश्वर, तुम्हारा हृदयसर्वस्व सेठ दौलतराम हूँ । देखो, जरा इधर देखो ।

चुन्नी——(घूँघट——खोलकर देखकर) अरे बापरे ! (मूर्च्छाका अभिनय करती है ।)

दौलत०——ऐं ! यह क्या बात है ?

बिहारी——तू कौन पाजी है ! भले आदमीकी औरतके बदनमें हाथ लगाता है ?

दौलत०——यह तो मेरी ही स्त्री है ।

बिहारी——तुम्हारी ?

दालत०——हाँ !

बिहारी——तुम बड़े भले आदमी हो !

दौलत०——यह मेरी स्त्री है ।

(चुन्नीका उठना ।)

दौलत०——वह देखो, होश आगया।

चुन्नी——मैं उनके बिना नहीं जी सकती।

बिहारी——धन्य पतिव्रता!

चुन्नी——मैं अबला सरला विह्वला बाला——

बिहारी——आहा हा हा!

चुन्नी——दैवकी सताई दुखपाई मुरझाई——

बिहारी——हाय हाय!

चुन्नी——मैं अलबेली नवेली अकेली कैसे रह सकती हूँ?

बिहारी——अकेली क्यों रहोगी मोहिनी, मायाविनी, बिहारीके जीतेजी तुमको काहेकी चिन्ता है?

दौलत०——बिहारी तुम्हारी यह हरकत?

चुन्नी——अभी मेरे पतिका पीछा हुआ है——

बिहारी——मेरी भी स्त्री अभी मरी है——

चुन्नी——मनकी हालत——

बिहारी——बहुत——

दौलत०——खराब है! सो तो समझा। लेकिन——

बिहारी——(चुन्नीसे) जाओ, अब तुम भीतर जाओ! मैं ब्याहकी तैयारी करने जाता हूँ।

(चुन्नीका जाना।)

दौलत०——कैसे! ब्याह और क्रियाकर्म एक साथ ही होगा? हा जगदीश्वर!

बिहारी——लाठी कहाँ है? यह है। (लाठी लेना।)

दौलत०——लकड़ीकी क्या जरूरत है?

बिहारी——स्त्रीको वश करनेकी तैयारी पहलेहीसे करलूं। ५०००) रुपयेका गहना है। १०००) रुपये नकद तो चुन्नीके ही पास है।

दौलत०—देखो, तुम मेरे बहनोई हो वकील हो । तुम ऐसे नीच नहीं हो सकते कि मेरे जीते ही मेरी स्त्रीसे ब्याह करो ।

बिहारी—नीच कैसा ? विधवासे ब्याह करनेमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है ।

दौलत०—किन्तु वह तो मेरी स्त्री है ।

बिहारी—यह बात तो वह खुद नहीं स्वीकार करती ।

दौलत०—ईश्वर ! (रोता है ।)

बिहारी—देखिए साहब, आपको देखकर मुझे दुःख होता है । शायद आप दौलतराम सेठ ही हों । किन्तु प्रमाण नहीं है । कानूनमें आप टिक नहीं सकते । बतलाइए, क्या करूँ ?

दौलत०—यही तो बात है । स्त्रीने नहीं पहचाना ! या मैं सचमुच, मर गया हूँ, देखूँ । समस्या यह है कि मैं मर गया हूँ या जीता हूँ ? मैं लहरोंमें पड़कर तूफानसे भरे संसार—सागरमें बहा बहा फिर रहा हूँ; या खेल खेल रहा हूँ ? मैं शेर रीछ साँप आदिसे परिपूर्ण बनके घोर घने अन्धकारमें रो रहा हूँ, या गाना गाता हूँ ? चुटकी काटकर देखूँ, (चुटकी काटता है) लगता तो है ! सिर हिला डुला कर देखूँ ! (वैसा ही करता है) कुछ भी समझमें नहीं आता !—नहीं, यह न जीना है न मरना है । यह जीने-मरनेकी एक खिचड़ी है ! कैसी आफत है ! मैंने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि मेरी ऐसी दशा होगी ।—ये कौन हैं ? ये तो सब मेरे सगे हैं ! अच्छा, छिपकर देखूँ ये क्या करते हैं ? (छिपता है ।)

(बाजेगाजेके साथ दौलतके नातेदारोंका प्रवेश ।)

१ आदमी—यहीं बैठो ! (बैठता है)

२ आदमी—हाँ, आज जरा जी भरकर आनन्द मनालें । (बैठता है)

३ आदमी—(बैठकर) बुड्ढा अब जाकर मरा।

४ आदमी—मैं तो बहुत खुश हुआ। (बैठता है)

५ आदमी—एक पैसा किसीको नहीं दिया। (बैठता है)

१ आदमी—बड़ा कंजूस था।

३ आदमी—वह समझे था कि मैं कभी नहीं मरूँगा।

२ आदमी—तो यह प्रमाणित हुआ कि दौलतराम सेठको भी मौत नाहीं छोड़ती !

४ आदमी—खूब कहा—हाः हाः हाः हाः—

५ आदमी—हाः हाः हाः हाः—

दौलत०—ये लोग तो खूब खुश देख पड़ते हैं।

१ आदमी—बुड्ढा बड़ा सूम थाँ।

२ आदमी—आफत गई।

दौलत०—एहसानमन्द हूँ।

३ आदमी—वसीयतनामेंमें जरूर हम लोगोंके लिए कुछ लिख गया होगा।

दौलत०—(अँगूठा दिखाकर) एक पैसा भी नहीं।

५ आदमी—किसीको तो दे ही गया होगा।

दौलत०—किसीको नहीं।

६ आदमी—साथमें ले जा सकेगा नहीं।

दौलत०—सन्दूकोंको न ले जा सकूँगा, चाबियोंका गुच्छा तो ले जा सकूँगा !

२ आदमी—दूसरे जन्ममें सिर पीटेगा।

दौलत०—सिर पीटनेको तो जी अभी चाहता है।

३ आदमी—आप न कुछ खाया न पिया—देखो तो !

दौलत०——भाई, अब ऐसा न होगा। दिनको अंगूर वगैरह मेवा और रातको बढ़िया भोजन !

४ आदमी——अब उसके दोनों लड़के सारी दौलत उड़ावेंगे।

दौलत०——छोड़ जाऊँगा, तब न !

५ आदमी——अच्छा अब गाओजी।

दौलत०——अच्छा गाओ, सुनूँ।

(सबका गाना।)

गजल ।

प्राण-रक्षामें बड़ी हैं झंझटें, यदि जानते।
तो न करते हम कभी इस जन्मकी ही चाहना॥
भार होते नींद खुलती, हर घड़ी आफत खड़ी।
आयुको अपनी बिताना, घोर है शव-साधना।
स्नान करते भूख लगती है सुलगती आगसी।
तब जुटाना अन्नका, उसको निगलना चाबना॥
अन्न चुक जाता, न बुझती पेटकी ज्वाला अहो।
नोन है तो घी नहीं, संयोग कुछ ऐसा बना॥
लेटते ही मक्खियाँ दिनको हमेशा दिक करें।
रातको फिर मच्छरोंका जुल्म होता है घना॥
हाय, आधी रातको जेवर जड़ाऊके लिए।
रूठना रोना प्रियाका मिनमिनाना माँगना॥
चीज लो तो दाम उसके माँगते हैं फिर असभ्य।
राह रोके हैं महाजन और करते लुचपना॥
ब्याह करते ही कई बच्चे भी हो जाते हैं हाय।
ब्याहनेमें औ पढ़ानेमें दिवाला पीटना॥

(दौलतरामके दोनों पुत्रोंका प्रवेश)

१ पुत्र——जायदाद आधी मेरी है।

२ पुत्र--एक पैसा भी तुम्हारा नहीं है। लालाजी वसीयतनामेंमें सब मेरे नाम लिख गये हैं।

दौलत०--लिख गया हूँ? कहाँ? मुझे तो नहीं याद!

१ पुत्र--वसीयतनामा जाली है। मैं साबित करूँगा।

२ पुत्र--कभी नहीं!

१ पुत्र--कभी नहीं।

२ पुत्र--मैं मिस्टर दासको अपनी ओरसे खड़ा करूँगा।

१ पुत्र--मैं बैरिस्टर जैक्सनसे पैरवी कराऊँगा।

२ पुत्र--मैं दस हजार रुपये खर्च करूँगा।

१ पुत्र--मैं पन्द्रह हजार रुपये उठाऊँगा।

२ पुत्र--तू बेईमान है!

१ पुत्र--तू धोखेबाज है!

२ पुत्र--तू मूसा है!

१ पुत्र--तू मच्छर है!

२ पुत्र--मेरे घरसे निकल जा!

१ पुत्र--तेरा घर!--तेरे बापका घर है?

२ पुत्र--निकलो--

१ पुत्र--चुप रह--

२ नातेदार--अजी झगड़ा क्यों करते हो? आज खुशी मनाओ। ऐसा आनन्दका दिन, तुम्हारे बाप मरे हैं!

३ नातेदार--हाँ, पेट भरकर खाओ।

४ नातेदार--जी भरकर आनन्द मनाओ।

५ नातेदार--नाचो!

२ नातेदार--गाओ!

१ नाते०—मैंने एक गीत जोड़ा है !

२ नाते०—हाँ गाओ, वही गीत–

३ नाते०—कौन ?

१ नाते०—वही जो मैंने जोड़ा है,—'बुड्ढा मरा है—'

दौलत०—इसी बीचमें गीत भी बन गया । बलिहारी !

(सबका गाना)

बुड्ढा मरा है बुड्ढा मरा है
बुड्ढा मरा है मरा है मरा है ।

दौलत०—बस, अब तो सहा नहीं जाता ।

(सबका गाना ।)

बुड्ढा मरा है मरा है मरा है ।

(दौलतराम लकड़ी हाथमें लिये आगे बढ़कर गाता है–)

बुड्ढा मरा नाहिं बुड्ढा मरा नाहिं
देखो अजी अभी बुड्ढा मरा नाहिं ॥

१ पुत्र—ऐं ऐं ! यह कौन है ?

२ पुत्र—हाँ, यह कौन है ?

दौलत०—(लड़कोंसे) तुम चाहे जितना आश्चर्य प्रगट करो लेकिन मुझको विश्वास है कि बुड्ढा अभी नहीं मरा और वह सशरीर तुम्हारे आगे खड़ा है ।

१ पुत्र—कैसे ?

२ पुत्र—ठीक तो है, कैसे ?

नातेदार लोग—(दौलतसे) तुम कौन हो जी, हमारे गानेमें खरमंडल डाल दिया ! निकलो । तुम कौन हो ?

दौलत०—मैं इन दोनों लड़कोंका बाप हूँ !

नातेदार०—बाप ! हो ही नहीं सकता। हम विश्वास ही नहीं करते। तुम साबित करो कि बाप हो।

दौलत०—सब कुछ साबित ही करना होगा ! भाइयो ! सुनो—इस बातको तो कोई साला नहीं साबित कर सकता कि वह बाप है। इस बात पर तो विश्वास ही कर लिया जाता है।

नातेदार०—नहीं, हम लोग विश्वास नहीं करते। निकल जाओ।

दौलत०—कहाँ जाऊँ ?

नातेदार०—यह हम क्या जानें ? हम नहीं जानते।

दौलत०—दोनों लड़कोंने पहचान लिया है, मगर मुँहसे स्वीकार नहीं किया। बाहरे कलजुगी लड़के।

नातेदार—(दौलतसे) अजी सोचते क्या हो ? दूधिया भंग है। पियोगे ? लो जरासी।

दौलत०—(कुछ सोचकर) मैं तो जीता हूँ, फिर दूधिया क्यों छोड़ूँ। (भंग लेकर पीता है।)

(रण्डीका प्रवेश।)

१ नातेदार—लो बी गौहरजान आगई। (गानेके ढंगसे) "आओ आओ मित्र !"

२ नातेदार—(उसी स्वरमें) "बैठिए सिर आँखों पर।"

३ नातेदार—(उसी स्वरमें)

इश्ककी गोली बना कर बाम पर फेंका करूँ।
तू मुझे देखे-न देखे मैं तुझे देखा करूँ॥

४ नातेदार—ठीक नहीं हुआ (दूसरे स्वरमें)–

इश्ककी गोली बनाकर बाम पर फेंका करूँ।
तू मुझे देखे-न-देखे मैं तुझे देखा करूँ॥

५ नातेदार—दे—ए—ए—ए—ए—ए ।

दौलत०—वाह, यहाँ तो सभी उस्ताद हैं ।

१ नाते०—देखते क्या हो !

२ नाते०—बी गौहरजानको गाने दो ।

दौलत०—(भंगके नशेमें) लेकिन मैं दौलतराम सेठ—

३ नाते०—पहले मैं गाऊँगा !—खा—आ—आ—आ—आ— !

४ नाते०—चुप ।—करूँ ऊँ—ऊँ ।

५ नाते०—गाओ जान, कोई नाटककी चीज गाओ—

गौहर०—अच्छा, सुनिए—

बूटी पिलाके लुभाय गया कोई मुझे ।

१ नाते०—वाह वाह वाह वाह ।

२ नाते०—ठहरो बीबी, अन्तरा मुझे कहने दो ।—

बड़े सबेरे जो कोई छाने वाकी लंबी दीठ ।
उड़त चिरैया वह पहचाने गिरी सड़कसे ईंट ॥

१ नाते०—सबेरे फेर छनेगी भंग सबेरे फेर छनेगी—

३ नाते०—सुनो—

दुसरे पहरे जो कोई छाने वाके लंबे कान ।
तवा कटोरा कलसी बेची घर लोटे पर ध्यान ॥

१ नाते०—सबेरे फेर छनेगी भंग सबेरे फेर छनेगी ।—

४ नाते०—अरे मेरी भी तो सुनो—

तिसरे पहरे जो कोई छाने ज्यों भादौंकी कीच ।
घरके जानें मर गये और आप नशेके बीच ॥

दौलत०—अरे घरके जानें तो जाना करें, पर न मैं मरा हूँ और न नशेके बीचमें हूँ !—

१ नाते०—अरे चुप, सबेरे फेर छनेगी भंग सबेरे—

[illegible]——[illegible]री क्या यों ही रह जायगी । सुनो——

चौ[illegible]हरे जो कोई छाने बच्चा आपी आप ।
[illegible]बे-जोरू बे-ससुरेके हो छै बच्चेका बाप ॥

[illegible]——वाह बेटा, तुम्हारी खूब रही !

१ नाते——अरररररर सबेरे फेर छनेगी भंग——

गोहर०——मुझे कोई बूटी पिलाके लुभाय गया कोई मुझे ।

(सबका नाचना । साथ ही साथ दौलतका भी नाचना और गिरना ।)

नातेदार——लो बी गोहरजान, एक ढेर हुआ तुम्हारे गानसे ।

दौलत०——(पड़े ही पड़े नशेमें) अबे चुप——मैं सेठ——दौलत-राम हूँ । या नहीं ?——फिर——मैं कौन हूँ ? कौन भाई दौलत, आगये !

(बिहारी, दारोगाके वेषमें रामचन्द्र, एक हवलदार और दो सिपाहियोंके वेषमें नन्दू, मोहन और सुन्दरका प्रवेश ।)

बिहारी——हाँ आगया दादा——

नातेदार——अरे पुलिस आगई । भागो भागो ! (भाग जाते हैं ।)

बिहारी——(दारोगासे) यही दौलतराम बनकर आया है——असामियोंको धोका देनेके लिए ।

दारोगा——क्या तुम कहते हो कि मैं सेठ दौलतराम हूँ ?

दौलत०——(हाथ जोड़कर) जी जमादार साहब ।

(सिपाहियोंका पकड़ लेना)

दारोगा——पकड़ो इसको ।

दौलत०——जी मैं——

दारोगा——दौलतराम सेठ है !

दौलत०——(काँपता हुआ) जी, कभी किसी जन्ममें नहीं !

दारोगा——तब उसके जैसा रूप रखकर क्यों आया ?

दौलत०——जी——

दारोगा—झूठ, सच बोलो ।

दौलत०—दारोगा साहब, मेरे कहनेके पहले ही आपने मेरी बातको झूठा ठहरा लिया !

दारोगा—वह मैं जानता हूँ ।

दौलत०—दारोगा साहब, यह तो मैं जानता था कि पुलिसके आदमी सर्वशक्तिमान् होते हैं, लेकिन यह न जानता था कि सर्वज्ञ भी होते हैं ।

दारोगा—सच बोलो । (रूलका हूला मारना ।)

दौलत०—जी वही कहनेवाला था, लेकिन इस मारसे तो सच बात भूली जाती है । अब मैं क्या कहूँ तो आप खुश हों ?

दारोगा—कि मैं दौलत सेठ नहीं हूँ । (रूल दिखाता है)

दौलत०—कभी नहीं । मारो न बाबा !

दारोगा—फिर तुम कौन है ?

दौलत०—संपत सेठ–

दारोगा—संपत सेठ कौन ?

दौलत०—दौलत सेठका छोटा भाई ।

दारोगा—तो फिर दौलत सेठके जैसा चेहरा बनाकर क्यों आया ?

दौलत०—जी—(सोचता है)

दारोगा—सच बोलो । (रूलका हूला मारता है) उसका ऐसा चेहरा बनाकर–

दौलत०—हम दोनों जोड़िया भाई थे ।

दारोगा—चुप रह ।

दौलत०—अच्छा चुप रहूँगा ।

दारोगा—(बिहारीको दिखाकर) ये कौन हैं ?

दौलत०—पहले थे मेरे—अर्थात् दौलतरामके बहनोई; लेकिन अब उसकी स्त्रीके पति हैं !

दारोगा—यह तुम सच कह रहे हो ?

दौलत०—जी मैं झूठ कभी कभी बोलता हूँ।

दारोगा—नाक रगड़ो, कान पकड़ो।

दौलत०—क्यों जमादार साहब ?

दारोगा—चुप रहो, कान पकड़ो।

दौलत०—अच्छा साहब। (वही करता है)

दारोगा—कहो मैं—कभी किसी जन्ममें सेठ दौलतराम नहीं था।

दौलत०—ऐसा ही होगा साहब ! मैं कभी न था।

बिहारी—Barred by limitation.

दारोगा—अच्छा, छोड़ दो।

बिहारी—(दारोगासे) चलिए, कुछ जलपान कर लीजिए।

दौलत०—और मेरी भूतपूर्व विधवाके साथ दारोगा साहबकी जान पहचान भी करा देना।

दारोगा—चुप रहो !

दौलत०—(डरकर) जी !

(दौलतके सिवा सब चल देते हैं।)

दौलत०—(आप ही आप) अन्तको रूलके हूलोंसे यह साबित हो गया कि मैं दौलत सेठ नहीं हूँ। कहा ही है कि मारके आगे भूत भागते हैं। नहीं भाई, मैं मर गया था, यह बात झूठ नहीं है। मर गया था। यह मेरा पुनर्जन्म है ! आज नया अनुभव और नया विश्वास पाकर मैं फिर जी उठा हूँ। मरनेके बाद जो कुछ होनेवाला था वह जीतेजी अपनी आँखोंसे ही देख लिया। गरीबोंको सताकर

और अपनेको भी धोका देकर जो रुपया मैंने जमा किया है वह इन लोगोंके यों उड़ानेके लिए ! बस अब नहीं ! अब अगर मैं अपना जीना साबित कर सका तो गरीबोंको अन्न-वस्त्र बाँटूँगा—और खुद भी पेट भरकर खाऊँगा । जबतक मैं साबित नहीं करता तब तक हँस—लो—खालो । अगर अपना जीना साबित न कर सका तो जंगलको चला जाऊँगा। और इस लिए तपस्या करूँगा कि पुनर्जन्म न हो ।

(बिहारी और चुन्नीका प्रवेश ।)

(चुन्नीका गाना ।)

इसीसे रखूँ तुम्हें नजरोंमें ।
तनिक फिरी जो आँख पिया तो देख न पड़े घरोंमें ॥ इसी० ॥
रत्न समझ, आँचलमें बाँधूँ, प्रीतम तुम्हें नरोंमें ।
आओ, रसमें रीस भला क्या, चलो चलें कमरोंमें ॥ इसी० ॥

चुन्नी—(दौलतसे) क्या सोच रहे हो ?

दौलत०—यही कि ! (हाथ जोड़कर बिहारीसे) महाशय, प्रणाम। (प्रणाम करना, फिर चुन्नीको हाथ जोड़ना) क्या आज्ञा है ?

बिहारी—दौलतरामजी !

दौलत०—कौन दौलतराम ?

बिहारी—तुम !

दौलत०—कौन कहता है ! तुम लोगोंने मिलकर अभी साबित कर दिया है कि मैं सेठ दौलतराम नहीं हूँ । अब मैं दौलतराम हूँ ? नहीं मैं दौलतराम नहीं हूँ ।

चुन्नी—अजी खफा क्यों होते हो । तुम तो मेरे प्राणनाथ हो ।

दौलत०—कैसे ! अभी तो सब साबित हो गया है । जन्मपत्र, डाक्टरका सार्टिफिकेट, अखबार गवाह—और सबसे बड़ा प्रमाण रूलका

हूला। इतने पर भी मैं तुम्हारा प्राणनाथ बना हुआ हूँ ! मैं कौन हूँ, मै नहीं हूँ।

चुन्नी—नहीं, तुम हो।

दौलत०—यह सुनकर बहुत खुश हुआ।

चुन्नी—तुम नाहक खफा क्यों होते हो।

दौलत०—मैं खफा हूँ, चिढ़ गया हूँ, मुझे हैरान न करो, मैं वनको जाऊँगा।

चुन्नी—मैं भी जाऊँगी।

दौलत०—मैं फकीर हो जाऊँगा।

चुन्नी—मैं फकीरिन हो जाऊँगी।

दौलत०—और तपस्या करूँगा कि पुनर्जन्ममें मुझे ब्याह न करना पड़े और अगर ब्याह भी करना पड़े तो तुम्हारे ही साथ न करना पड़े।

चुन्नी—मैं तपस्या करूँगी कि तुम्हारे ही साथ मेरा ब्याह हो।

दौलत०—नहीं, तुम मुझे प्यार नहीं करती।

चुन्नी—वाह, प्यार क्यों नहीं करती।

(बिहारी सिर हिलाता है।)

दौलत०—सिर हिलाते हो ? अब क्या कोई और उपद्रव सोच रहे हो ? इधर देखते हो ! यह मेरी स्त्री है। (चुन्नीका हाथ पकड़ता है।)

बिहारी—तुम्हारा यही विश्वास है ?

दौलत०—विश्वास ! अब क्या यह साबित करना चाहते हो कि यह मेरी स्त्री भी नहीं ! जन्मपत्र निकालो—सार्टीफिकेट हासिल करो-अखबारमें लिखो।

बिहारी—अच्छा तुम्हारी स्त्री तुमको देता हूँ।

दौलत०—बड़ी कृपा हुई !

बिहारी—अच्छा सेठजी, आपको कुछ शिक्षा मिली या नहीं !

दौलत०—बहुत कुछ ।—यह मेरा पुनर्जन्म है ।

गाना ।

गजल (सोहनी)

व्यर्थ ही तूने जमा जोड़ी मिला सुख क्या मिला ?
हाय, इसके वास्ते काटा अनेकोंका गला ?
गाड़ना, संदूकमें रखना, जमाकरना वृथा ।
कालके आगे कहीं चलती किसीकी है भला ?
जो न परउपकारमें या भोगमें दौलत लगी ।
तो कहो, फिर साथ उसको कौन अपने ले चला ?
दान या तो भोग या फिर नाश धनकी गति कही !
जो न देता और खाता, नाश ही उसको फला ॥
सूमके पीछे सभी धन दस जगह लुट जायगा ।
इस लिए खाले, खिलाले और बनले मनचला ॥

(पर्दा गिरता है ।)